शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अध्ययन पुस्तिका

कलीसिया और आराधना

अध्याय 1: एक साथ एकत्रित होना: कौन, क्या, कहाँ

परिचय

यह अध्याय कलीसिया और आराधना के शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। अध्यायों की यह श्रंखला इस बात की जाँच करती है कि बाइबल कलीसिया के उद्देश्य के संबंध में क्या सिखाती है और वह कैसे अस्तित्व में आई। कलीसियाई अगुवों को इसकी जानकारी होनी चाहिए कि स्वर्गारोहण के पश्चात् यीशु मसीह ने अपनी देह के रूप में (संसार में अपने राजदूतों के रूप में) कार्य करने के लिए कलीसिया की स्थापना क्यों की। पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरी कलीसिया को संसार भर में सुसमाचार का प्रसार करने और स्थानीय समुदाय में सेवा करने का निर्देश दिया गया है। कलीसिया आराधना करने, परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाने और एक–दूसरे की सहायता करने एवं प्रोत्साहन देने के लिए नियमित रूप से एकत्रित होती है।

इस अध्ययन पुस्तिका का लक्ष्य यह है कि एक व्यक्ति स्वयं किसी विशिष्ट अध्याय को गहराई से देखे। इन अध्यायों का प्रयोग www.discipleshipessentials.org पर उपलब्ध वीडियो एवं ऑडियो उत्पादनों जैसी शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

कलीसिया और आराधना

अध्याय 1: एक साथ एकत्रित होना: कौन, क्या, कहाँ

यह क्या है?

इस अध्याय का उद्देश्य कलीसिया की पहचान और एक साथ एकत्रित होने के धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों का अनुसंधान करना है।

आपकी जानकारी के लिए...

मसीहियत का इतिहास कलीसिया की आन्तरिक असहमतियों के फलस्वरूप हुए विभाजनों की श्रंखला को प्रकट करता है। परन्तु यीशु चाहता है कि कलीसिया संगठित रहे। कलीसिया की प्रकृति और उद्देश्यों की एक स्पष्ट धर्मशास्त्रीय जानकारी हमारी सहायता करेगी। यह अध्याय अनुसंधान करता है कि 'किसे' स्वयं को 'कलीसिया' का भाग कहना चाहिए, जब वे एकत्रित होते हैं तो क्या होता है, उन्हें कहाँ और कब एकत्रित होना चाहिए। हम व्यवहारिक स्तर पर इन विचारों का अनुसंधान करेंगे, यह ध्यान रखते हुए कि विश्वासों में एकीकृत होने पर भी हमारे बीच में अत्यधिक भिन्नता है। कलीसिया उन स्थानों पर अलग दिखेगी जहाँ मसीहियों को सार्वजनिक रूप से एकत्रित होने की अनुमति नहीं है या जब विश्वासी एक–दूसरे से अलग–थलग होते हैं।

शुरूआत करना

1. आप 'कलीसिया' शब्द को कैसे परिभाषित करेंगे? एक 'सच्ची' कलीसिया कैसे बनती है?

2. कलीसिया और एक ऐसे समूह के लोगों के बीच क्या अन्तर है जो कुछ सीखने या करने के लिए एक साथ एकत्रित होते हैं?

अध्ययन

❖ **कलीसिया क्या है?** जब हम कलीसिया के रूप में आराधना करने के लिए इकट्ठे होते हैं तो यह जानना अद्भुत है कि हम अकेले नहीं हैं। संसार भर के करोड़ों लोगों के साथ–साथ हम से पहले जीवित रहे करोड़ों लोग भी विश्वासियों के इस परिवार के सदस्य हैं। मसीहियों के प्रत्येक समूह में कुछ अन्तर होते हैं परन्तु वैश्विक कलीसिया में अत्यधिक समानता है और वह तभी से इकट्ठी हो रही है जब यीशु पृथ्वी पर था।

➢ **कलीसिया परमेश्वर की योजना है:** जब हम कलीसिया के बारे में बात करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि यह हमारी योजना नहीं थी; परमेश्वर की सदा से यह इच्छा थी कि वह स्वयं के लिए ऐसे विश्वासयोग्य और क्षमा पाए हुए लोगों के समूह को इकट्ठा करे जो उससे प्रेम करते हैं। 'कलीसिया' का अर्थ लोगों का झुण्ड या मण्डली है और मूलतः इसका प्रयोग किसी उद्देश्य के साथ इकट्ठे होने वाले किसी भी समूह के लिए किया जाता था।

➢ पुराने नियम में परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के समूह को क्या कहा जाता था? निर्गमन 16:10; न्यायियों 20:1; भजन 22:22 देखें।

➢ पुराने नियम में परमेश्वर के सारे विश्वासयोग्य लोग एक ही जाति के थे। वे इस्राएल के परिवार के थे। अब कलीसिया का अर्थ यहूदियों और अन्यजातियों दोनों (संसार के सारे लोग) की मण्डली है जो मसीह में नई वाचा से जुड़े हैं। (इफिसियों 2:11–12)

➢ कलीसिया की खोज मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के लिए की गई थी (हालांकि हमारे लिए बहुत से लाभ हैं!) यीशु ने कलीसिया के बारे में क्या कहा था? मत्ती 16:18 पढ़ें।

➢ **दृश्य और अदृश्य कलीसिया:** हम जानते हैं कि कलीसिया लोगों के एकत्रित होने के भवन या आराधना की समयावधि से कहीं बढ़कर है। कलीसिया *परमेश्वर की प्रजा* है। हम पूछ सकते हैं कि कौन संबंधित है या हमें कैसे पता चलेगा कि कलीसिया वास्तव में कौन है। सरल सा उत्तर है कि हमें पता नहीं चल सकता। पूरी तरह से नहीं। बाइबल बताती है कि एक मसीही की तरह दिखने या कार्य करने वाला या यीशु मसीह के सच्चे विश्वासी होने का अंगीकार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर का नहीं है। वे धोखे में हो सकते हैं या किसी कारणवश दूसरों को धोखा देने का प्रयास कर रहे हैं।

- **दृश्य कलीसिया:** दृश्य कलीसिया वे लोग हैं जो स्वयं को मसीही कहते हैं और उन भवनों में एकत्रित होते हैं जिन्हें हम कलीसियाएँ (या घर, अन्य इमारतें, खुली जगह) कहते हैं। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति सच्चा विश्वासी हो सकता है और नहीं भी, हालांकि वे कलीसिया के उद्देश्यों के अधीन रहते हैं, मसीही होने का अंगीकार करते हैं, और पवित्र रस्मों में भाग लेते हैं।

- **अदृश्य कलीसिया:** सच्ची कलीसिया में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा वास्तव में उद्धार पाया है। हम यह भरोसा रख सकते हैं कि परमेश्वर उन्हें जानता है जो उसके हैं। निम्नलिखित वचन आपको सच्ची कलीसिया के बारे में क्या बताते हैं?

इफिसियों 5:25	
2 तिमुथियुस 2:19	
यूहन्ना 10:27	

❖ **कलीसिया के उद्देश्य:** परमेश्वर ने कलीसिया को एक माध्यम के रूप में बनाया है जिसके द्वारा वह अपने उद्देश्यों को पूरा करता है। परमेश्वर चाहता है कि यह कार्य उसके पवित्र और चुने हुए लोगों के द्वारा समुदाय में किया जाए। कलीसिया का अस्तित्व निम्नलिखित को पूरा करने के लिए है:

- **सत्य की घोषणा करना**
- **एक साथ आराधना करना**
- **पवित्रता में बढ़ना**
- **प्रेम में सेवा करना**

➢ **कलीसिया कैसी है:** इसके अतिरिक्त, कलीसिया में कुछ विशेषताएँ होती हैं। बाइबल कलीसिया को मसीह की दुल्हन के रूप में बताती है इसीलिए हम कई बार कलीसिया का उल्लेख स्त्रीलिंग के रूप में करते हैं। वह निम्नलिखित है:

- **एक:** उद्देश्य में एक (प्रेरितों 4:32; यूहन्ना 17:21)
- **पवित्र:** मसीह में विश्वास के द्वारा अलग और पाप से शुद्ध की गई। (लैव्यवस्था 11:44–45; 1 पतरस 1:14–16)
- **सार्वभौमिक:** कलीसिया किसी एक भौगोलिक क्षेत्र, एक परिवार, एक नस्ल या राष्ट्रीयता तक सीमित नहीं है विविध लोगों से बनी है जिनका एक सिर, यीशु मसीह है। (कुलुस्सियों 3:11; लूका 9:6)
- **प्रेरितीय:** कलीसिया की शुरूआत प्रेरितों से हुई, आज तक प्रेरितों की शिक्षा को मानती आई है जिसमें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र शामिल है। (प्रेरितों 1:1–2; प्रेरितों 2:42; इफिसियों 2:19–21)

- **सच्ची और झूठी कलीसिया के बीच पहचान करना:** जिस प्रकार कुछ लोग झूठा दिखावा करते हुए स्वयं को मसीही कहते हैं उसी प्रकार लोगों की ऐसी मण्डलियाँ भी हैं जो कलीसिया के समान दिखती और कार्य करती हैं परन्तु सच्ची कलीसिया से उनका कोई संबंध नहीं है। एक सच्ची कलीसिया बाइबल में वर्णित सुसमाचार का वफादारी से प्रचार करती है। यह सुसमाचार में न तो कुछ जोड़ती है और न ही सुसमाचार के सन्देश में बदलाव लाती है। सच्ची कलीसिया बपतिस्मा और प्रभु भोज की रस्मों को परमेश्वर के वचन के अनुसार पूरा करती है। नही ंतो वह एक झूठी कलीसिया है जिसे झूठे भविष्यद्वक्ता या उपदेशक द्वारा शिक्षा जाती है। इन झूठे उपदेशकों के बारे में बाइबल क्या कहती है?

2 कुरिन्थियों 11:1–15	
गलातियों 1:6–12	
मरकुस 13:22	
2 पतरस 2:1–3	

- **कौन एकत्रित होता है?** बाइबल में विभिन्न आकार के समूहों का उल्लेख है जिन्हें 'कलीसिया' कहा गया है। किसी भी स्तर पर विश्वासियों के समुदाय को एक कलीसिया कहा गया है। कलीसिया को बताने वाले दूसरे वाक्यांश "बुलाए हुए," "विश्वासयोग्य लोगों की मण्डली," या "मार्ग के अनुयायी" हैं।

  - **सारे आकारों की कलीसियाएँ:** कलीसिया किसी भी आकार की हो सकती है और किसी भी स्थान पर एकत्रित हो सकती है। बाइबल में कलीसियाओं का उल्लेख निम्न प्रकार से किया गया है:

    - **लघु समूह या घरेलू कलीसियाएँ** (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19)
    - **क्षेत्रीय कलीसियाएँ** (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:2)
    - **राष्ट्रीय कलीसियाएँ** (प्रेरितों 9:31)

  - **सदस्यता:** प्रत्येक कलीसियाई समूह में सदस्यता की योग्यताएँ अलग–अलग हो सकती हैं। कई बार सदस्यता कक्षा या कलीसिया के अगुवे के साथ साक्षात्कार की माँग रखी जाती है। आमतौर पर एक व्यक्ति को सदस्य मान लिया जाता है यदि वह:

    - नियमित रूप से उपस्थित रहता है
    - साझे कार्य में आर्थिक योगदान देता है
    - आम विश्वासों को मानता है
    - बपतिस्मा के द्वारा यीशु पर व्यक्तिगत विश्वास की सार्वजनिक घोषणा करता है और प्रभु भोज में शामिल होने के द्वारा निरन्तर विश्वास की घोषणा करता है।

एक स्थानीय कलीसिया से जुड़ना महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह पर हमारा विश्वास हमें वैश्विक अदृश्य कलीसिया का सदस्य बनाता है परन्तु विश्वासियों के एक विशिष्ट समूह से जुड़ना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम उनके प्रति जवाबदेह होते हैं। साथ ही हम दूसरों से सीखते हैं, संसाधनों को आपस में बाँटते हैं और एक साथ मिलकर सुसमाचार का प्रचार करते हैं।

- मसीहियों के किसी विशिष्ट, स्थानीय समूह से संबंधित होने के क्या लाभ हैं?

- **एक–एक कलीसिया को परिभाषित करने वाले अवयव:** एक साथ एकत्रित होने वाले मसीहियों के प्रत्येक समूह की अपनी परिभाषित करने वाली विशेषताएँ होंगी। उनमें से प्रत्येक कलीसिया की अद्वितीय अभिव्यक्ति है और वे वैश्विक अदृश्य कलीसिया से संबंधित हैं। इन परिभाषित करने वाले अवयवों में से कुछ इस प्रकार हैं:
  - **संगठन:** ये कलीसियाओं के समूह होते हैं जो प्रशासन या आराधना जैसी समान कलीसियाई रीतियों और विशेष सैद्धान्तिक विश्वासों के समूह को मानते हैं।
  - **भाषा या राष्ट्रीयता:** शिक्षण और आराधना की आसानी के लिए एक भाषा बोलने वाले एक साथ एकत्रित होने का निर्णय ले सकते हैं। कई बार किसी एक राष्ट्रीयता वाले लोग एक कलीसिया के रूप में एकत्रित होने का निर्णय ले सकते हैं, विशेषत: यदि वे किसी दूसरे देश के या शरणार्थी हैं।
  - **निकटता:** कलीसियाएँ सामान्यत: उन विश्वासियों से बनी होती है जो एक–दूसरे के निकट रहते हैं।

- अपनी कलीसिया के बारे में विचार करें। आपकी स्थानीय कलीसिया को परिभाषित करने वाले अवयव क्या हैं? यदि आप एक कलीसिया में दूसरे विश्वासियों से मिल नहीं पा रहे हैं तो ऐसा क्या है जो आपको रोक रहा है?

- **सदस्य, आगन्तुक, मेहमान:** किसी भी कलीसियाई मण्डली में विविध प्रकार के लोग उपस्थित हो सकते हैं। विश्वासियों की सुरक्षा संबंधी चिन्ताओं वाले स्थानों के अलावा अधिकाँश कलीसियाओं के द्वारा किसी आगन्तुक या मेहमान या किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए खुले रहते हैं जो आराधना में शामिल होना चाहता है या परमेश्वर के वचन को सुनना चाहता है। उपस्थित आगन्तुकों और मेहमानों में ऐसे मसीही शामिल हो सकते हैं जो दूसरी मण्डलियों से हैं साथ ही ऐसे अविश्वासी भी हो सकते हैं जो मसीहियत का अनुसंधान कर रहे हैं और अपने प्रश्नों के उत्तर खोज रहे हैं।

❖ **जब वे एकत्रित होते हैं तो क्या होता है?** यह समझने के बाद कि कलीसिया किन से निर्मित है, हम यह सोच सकते हैं कि एक कलीसिया के सदस्यों के एकत्रित होने पर क्या होना चाहिए? एक कलीसियाई मण्डली की गतिविधियों के बारे में बाइबल क्या कहती है?

➢ **आरम्भिक कलीसिया:** इस प्रश्न के उत्तरों के लिए हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देख सकते हैं कि कलीसिया की शुरूआत के समय क्या हो रहा था। शुरूआती विश्वासी यहूदी थे जो मन्दिर में एकत्रित होते थे जहाँ वे सदा से परमेश्वर की आराधना करते आए थे। परन्तु अब वे उसकी आराधना पुरानी बलिदान की प्रणाली के बजाय यीशु मसीह के द्वारा उद्धार की एक नई जानकारी के साथ करते थे। जब कलीसिया बढ़ने लगी और अन्यजातियों को शामिल किया जाने लगा तो विश्वासी घरों और अन्य स्थानों में एकत्रित होते थे। हम इन वचनों में शुरूआती कलीसिया की कुछ बातों को देख सकते हैं। वचनों के प्रत्येक समूह को पढ़ें और बताई गई गतिविधियों को लिखें।

वचन	गतिविधि
प्रेरितों 20:7 1 कुरिन्थियों 16:1–2	
प्रेरितों 11:25-57 प्रेरितों 17:11 प्रेरितों 2:42	
1 कुरिन्थियों 11:17-33	
कुलुस्सियों 3:16 इफिसियों 5:19	
प्रेरितों 1:14 प्रेरितों 12:5 प्रेरितों 12:12	
प्रेरितों 2:44-45 प्रेरितों 4:32-35	
1 कुरिन्थियों 12:24-26 रोमियों 12:4-5	
प्रेरितों 6:1-6 प्रेरितों 2:45 प्रेरितों 4:34 1 तिमुथियुस 5:16	
2 कुरिन्थियों 8:18 प्रेरितों 5:42 2 कुरिन्थियों 10:15-16	

➢ **हम क्या करते हैं:** आज की कलीसिया की गतिविधियाँ आरम्भिक कलीसिया के समान ही हैं। उनमें परमेश्वर की आराधना करना, प्रार्थना करना, परमेश्वर के वचन की घोषणा, प्रचार करना

और सिखाना, दान देना, सेवा करना, और एक–दूसरे के साथ समय व्यतीत करना शामिल है। प्रभु भोज नियमित रूप से होना चाहिए। कुछ कलीसियाएँ एकत्रित होने पर सख्त आराधना विधि या संरचना का प्रयोग करती हैं। कुछ अन्य कलीसियाएँ गतिविधियों की व्यवस्था में स्वतंत्रता को व्यक्त करती हैं। कुछ मण्डलियों में एक नियमित उपदेशक या प्रचारक होता है। दूसरी कलीसियाओं में सदस्य बारी–बारी से एक–दूसरे को सिखा सकते हैं। महत्वपूर्ण बात नियमित रूप से एकत्रित होना और एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना करना है।

- आरम्भिक कलीसिया की किन गतिविधियों को आप आज की कलीसियाओं में पाते हैं?

- **वे कहाँ और कब एकत्रित होते हैं?** कलीसिया क्या है और एक साथ एकत्रित होने पर उन्हें क्या करना चाहिए आदि बातों को देखने के बाद हम यह सोच सकते हैं कि उन्हें कब और कहाँ एकत्रित होना चाहिए।

  - **सब्त और रविवार के दिन:** पुरानी वाचा में सृष्टि के सातवें दिन के आधार पर सब्त का दिन शनिवार का दिन था। परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग कोई काम न करने और यह स्मरण करने के द्वारा सब्त का दिन मनाते थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें दासत्व से स्वतंत्रता देकर विश्राम दिया था। आरम्भिक कलीसिया प्रभु भोज और परमेश्वर की आराधना में शामिल होने के लिए सप्ताह के पहले दिन (रविवार) एकत्रित होने लगी। इसका कारण यह था कि नई कलीसिया यीशु के पुनरूत्थान को यादगार बनाना चाहती थी जो रविवार सुबह हुआ था। नये नियम में हमें एकत्रित होने के समय के संबंध में स्वतंत्रता दी गई है। मसीहियों के लिए रविवार सुबह आराधना के समय के लिए एकत्रित होना आम है।

  - निम्नलिखित वचन एक साथ एकत्रित होने के बारे में क्या कहते हैं? कुलुस्सियों 2:16–17; रोमियों 14:5–6; गलातियों 4:9–10 पढ़ें।

  - **पूरे सप्ताह:** कलीसिया के शुरूआती दिनों में विश्वासी प्रतिदिन एकत्रित होते थे। आज हमारे लिए प्रार्थना, विशेष आराधना, बाइबल कक्षा या अध्ययन, या संगति का समय हो सकता है जो पूरे सप्ताह चलता है।

  - **हम कहाँ एकत्रित होते हैं:** पुरानी वाचा की रीतियों से भिन्न अब हमें परमेश्वर की आराधना के लिए एक मन्दिर या आराधनालय को अलग करने की आवश्यकता नहीं है। आरम्भिक कलीसिया में विश्वासी एक–दूसरे के घरों में, आराधनालय में (धार्मिक भवन) या खुली जगह पर भी

आराधना करते थे। आज कलीसियाएँ अक्सर भवनों में एकत्रित होती हैं परन्तु वास्तव में विश्वासी परमेश्वर की आराधना के लिए कहीं भी एकत्रित हो सकते हैं।

- **उपसंहार:** बाइबल हमारे इन प्रश्नों का उत्तर देती है कि कलीसिया कौन है, इसके उद्देश्य क्या हैं, एक साथ एकत्रित होते समय विश्वासियों को क्या करना चाहिए, और कलीसिया कहाँ एकत्रित होती है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हम कलीसिया में जाते या कलीसिया में शामिल नहीं होते हैं बल्कि (विश्वासियों के रूप में) हम कलीसिया हैं। एक साथ एकत्रित होना परमेश्वर के लिए हमारे जीवन को व्यतीत करने का विस्तार है।

साराँश

- कलीसिया यीशु मसीह के छुटकारा पाए हुए, विश्वासयोग्य अनुयायियों से बनी है। विश्वासियों की विभिन्न मण्डलियों में अद्वितीय गुण हो सकते हैं परन्तु वैश्विक कलीसिया में अत्यधिक समानता है।
- कलीसिया के उद्देश्य सत्य की घोषणा करना, एक साथ आराधना करना, पवित्रता में बढ़ना और प्रेम में सेवा करना है।
- विश्वासियों की एक मण्डली (स्थानीय कलीसिया) में सदस्यता को प्रोत्साहित किया जाता है।
- प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए वर्णन के अनुसार हम आरम्भिक कलीसिया से आज की कलीसियाओं के लिए व्यवहारिक सबक सीख सकते हैं।

विचार के लिए प्रश्न

1. आरम्भिक कलीसिया की गतिविधियाँ किस प्रकार आज की कलीसिया के समान थी? उनमें क्या भिन्नता थी?

2. कलीसियाओं के आयु, सामाजिक स्तर, नस्ल या अन्य विभाजक अवयवों के आधार पर एक–दूसरे से अलग होने पर क्या खतरा है? क्या एक कलीसिया में विभिन्न स्थानों के लोग होने चाहिए या एक ही स्थान के? एक कलीसिया सभा के प्रभाव होने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण अवयव क्यों है?

3. कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किस एक बात में आप कलीसिया की सहायता कर सकते हैं?